Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

गांधी जी की वर्तमान समय में प्रासंगिकता

डॉ0 विकास चन्द्र वशिष्ठ

एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ।

सारांश– आज भारत जो भी है वह सब गांधी जी की देन है। गांधी जी जैसे महापुरूष भारत में अगर पैदा न होते तो आज भी भारतवासी गोरे के अत्याचार की पीड़ा सहते। गांधी जैसे महापुरूष ने हमें इस पीड़ा से बचाया और गांधी जी ने हमें अंग्रेजी से आजाद कराया और अग्रेजी को भारत से भगाया। इसलिए गांधी जी पूरे राष्ट्र के पिता कहलाये इसलिये गांधी जी राष्ट्रपिता कहलाये।

मुख्य शब्द– गांधी, भारत, अत्याचार, धर्म, आजाद, जीवन।

यह अध्ययन और मनन के बाद उन्हें यह सच्चाई साफ–साफ दिखाई देनी लगी कि दुनिया के सव बड़े धर्म– मजहबों के बुनियाद सिद्धान्त एक है। राजेन्द्र बाबू के 64.50 को महात्मा गांधी स्मृति मंदिर, बम्बई के उद्घाटन के अवसर पर दिये गये भाषण का अंश – "बुद्धदेव के बाद पिछले पच्चीस–छब्बीस सौ वर्ष में भारत वर्ष में दूसरा ऐसा ऐसा कोई व्यक्ति नहीं हुआ जिसने लोगों के जीवन पर इतनी गहरी छाप डाली हो, जितनी गांधी जी ने डाली है। मेरा यह सौभाग्य रहा कि 30–31 वर्ष तक गांधी के चरणों में हरकर मैं बहुत निकट से कुछ न कुछ करता रहा। मैंने एक जगह लिखा है कि गांधी जी बहुत बड महापुरूष थे और उनके नजदीक रहकर मैं भी उतना लाभ न उठा सका जितना उनके निकट रहने वालों को उठाना चाहिए यह बात सर्वथा ठीक है मुझसे जितनी शक्ति थी उतना ही लाभ मैं उठा सका। मनुष्य में जितनी शक्ति और प्रतिभा होती है। उसके अनुसार ही वह काम करता है। किसी बीमार से डाक्टर लोग वह कहे कि फलो औषधि पौष्टिक है और अगर वे उसे उस औषधि को दे भी, पर बीमार में उसको पचाने की शक्ति न हो तो उसके लिए वह औषधि किस काम की। वह उस बीमार को लाभ नहीं पहुंचा सकती। यही बात बड़े लोगों के समागम से होती हैं जिस तरह गंगा नदी हिमालय से लेकर समुद्र तक 1500–1600 मील बराबर बहती है उसी तरह महात्मा गांधी अपनी 80 वर्ष की अवस्था तक लोगों को सिखाते गए और हमारे ऐहिक और पार लौकिक जीवन से संबंध रखने वाली बाते बताते गए। गंगा तो सब जगह होकर बहती है, मगर उससे किसी को ज्यादा लाभ मिलता है और किसी को कम । सबको बराबर लाभ नहीं मिल पाता। जिसमें जितनी शक्ति होती है वह उतना ही लाभ उससे उठाता है। कोई छोटे से छोटे में उसका जल निकालकर पी सकता है और किसी के लिए वह भी संभव नहीं होता। गांधी जी का जीवन ऐसा ही था। जिसकी जितनी शक्ति थी वह उतना लाभ गांधी जी की जीवन गंगा से हासिल करता था। मैं

उनके नजदीक रकर उनकी जीवन गंगा से एक लोटा भर ही अमृत ले सका। गांधी जी जीवन आदर्श जीवन था। वह अपने जीवन से लोगों को वह दिखा गए कि किस तरह मनुष्य को अपना जीवन बनाना चाहिए। हमें यह समझा लेना चाहिए कि उन्हीं के बताए हुए आदर्श पर चलकर हम अपना और देश का भला कर सकते हैं। हमें चाहिए कि हमेशा उनके आदर्श को सामने रखकर हम आगे बढ़े गांधी जी को यहां से गए अभी बहुत दिन नहीं हुए है। शायद हमने उनसे कुछ सीख नहीं और ऐसा मालूम होता है कि बहुत कुछ सुना नहीं, उनके साथ रहकर हम उनसे बहुत दूर बने रहे। हमने उसने वहीं सीखा जो सीख सकते थे। एक कहावत है कि चिराग के चीनचे अंधेरा। वहीं कहावत यहां भी लागू होती है। हम चिराग के नीचे रहते थे और हमारा व्यक्तित्व उनके प्रकाश से ज्योतिर्मच न हो सका। भारत वर्ष के सामने आज यही सबसे बड़ी समस्या है कि गांधी जी के बताए हुए रासते पर कहा कि और बि तक चला जा सकता है और कहां तक उसके बदले में दूसरे रास्ते पर चलने में इसकी भलाई है? मेरा अपना विश्वास यह है कि भारतवर्ष के लिए ही नहीं, सारे संसार के लिए गांधी जी बताए रास्ते के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। अगर हम शांति चाहते है सुख चाहते है, सचमुच मनुष्य बनकर चाहते है तो हमे चाहिए कि हम गांधी जी के हुए मार्ग पर चलकर अपनी और साथ–साथ सारे संसार की भलाई करें। आज दुनिया में नए–नए अविष्कार हो रहे हैं। वैज्ञानिक अविष्कारों के फल आज हमकों मिल रहे। उनको देखकर हम लजुभा जाते हैं, पर इस लोभ को देखकर अक्सर मुझे डर लगता है कि कहीं हम गलत रास्ते पर न चले जाएं पहले भी ऐसा हुआ है।

दूसरे देश में लोगों ने यहां की शिक्षा से फायदा उठाया और हम इस देश में रहते हुए भी वंचित रहे। गांधी जी के जीवन से हमने लगभग– कुछ बताया उसकों हम भूल जाएं और दूसरे देश के लोग जिन्होंने उनकी शिक्षा को अपनाया हो, हमारे यहां आकर हमकों उनकी शिक्षा का पाठ नए सिरे से पढाए।

भगवान बुद्धदेव भारत में पैदा हुए। हमने उसने जो कुछ सीखा था, हम उनको भूल गए। देश के बाहर के लोगों ने उनके सिखाए मार्ग पर चलकर बहुत कुछ लाभ उठाया और वही लोग आज हमकों उनका संदेश सुना रहे हैं। 80 वर्ष की अवस्था तक भगवान बुद्ध इस देश में प्रचार करते हैं। "गांधी जी भी 80 वर्ष तक प्रचार करते हैं"2 सारे देश में भ्रमण करके उन्होंने लोगो को शिक्षा दी। उनके जीवन में शिक्षा को ग्रहण किया था। मगर सारे देश में 74 देखा जाए तो आज ने–गुने बुद्ध मतवाले मिलते है, जबकि दूसरे देशों में आज भी करोड़ों की संख्या में बुद्ध मतवाले लोग मिलते हैं। हाँ, यह ठीक है कि उनका बहिष्कार किया गया। मेरा विचार है कि बुद्धदेव की शिक्षा हमारे देशवासियों ने बहुत हद तक अपने जीवन में अपना ली। मैं चाहता हूँ कि इसी तरह हम गांधी जी के आदर्शों के अनुकूल आचरण करे। जो–जो मुसीबते हमारे सिर पर आए उसने हम बचे। गांधी जी चाहते थे– कि "एक दूसरे के साथ प्रेम का व्यवहार किया जाए। हम आपस में मिल जुलकर रहे सिर्फ अपने ही लोगों से नहीं बल्कि मनुष्य मात्र से प्रेम का बर्ताव करे। इससे सारे देश का उद्धार होगा। गौरे के लिए गांधी हिन्दुस्तान था और हिन्दुस्तान गांधी हमारे देश का इज्जत बढ़ी है सियत बढ़ी। दुनिया ने तालीम किया कि एक अजीब ऊँचे दर्जे का आदमी हिन्दुस्तान में पैदा हुआ, फिर अंधेरे में रोशनी आई। जो सवाल लाखों के दिल में थे और उनको परेशान करते थे। उनके जवावों की कुछ झलक नजर आई। आज उस जववा पर अमल न हो तो कल होगा। उसे जववा भी मिलेगें, और भी अधेरों

में रोशनी पड़ेगी, लेकिन वह बुनियादी पक्की है और उी पर इमारत खड़ी होगी। इन प्रसंगों से गांधी ज की महानता सामने आती है।

अहिंसा और प्रेम पर उनके विचार आज भी प्रासंगिक

महात्मा गांधी के विचारों की प्रासगिकता के लेकर समय–समय पर काफी बहस मुबाहिस होता रहा है। अहिंसा, प्रेम, त्याग जैसे मसलों पर जहां उनके गुण निर्विवादी रहे है, वहीं विदेश में भी मार्टिन लूथर किंग व नेलसन 75 मडेला जैसे नेता जी के विचारों से प्रेरणा लेते रहे हालांकि विकास और औद्योगिकरण जैसे मसलों पर उनके विचारों से प्रेरणा लेते रहे हालांकि विकास

और औद्योगिकरण जैसे मामलों पर उनके विचारों पर सदैव मतभेद रहे हैं। भारत में भी जब औद्योगिकरण की नीतियों का सवाल उठा तो नेहरू माडल ही अपनाया गया। बहरहाल गांधी जी के विचारों के मामले में यह हर कोई स्वीकार करेगा कि उन्होंने केवल भारत ही नहीं बल्कि बाकी दुनिया पर भी गहरा असर डाला है। यह जानना रोचक होगा कि आखिर वे कौन से विचार थे जिनके कारण आज भी लोग उन्हें एशिया में जन्मा सबसे प्रभावशाली व्यतिव मानते हैं।

प्रार्थना के बारे में गांधी जी

गांधी जी ने अपनी किताब में साफ स्वीकार किया है कि उन पर उनकी मां के धार्मिक संस्कारों का भारी प्रभाव पड़ा। वह दूसरे धर्म के लिए आदरभाव रखते थे, लेकिन अपने धर्म में गांधी जी का गहरा यकीन था उनकी समूची दिनचर्या धार्मिक थी खासकर प्राथा में उनका अगाध विश्वास था। प्रार्थना के लिए जाते समय ही उनकी मृत्यु हुई। बैष्णवजन तो तेने कहिएपीर पराई जावे रे, यह उनका सबसे प्रिय भजन था। उनका मानना था कि प्रार्थना ईश्वर से साक्षात्कार का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। "प्रार्थना मनुष्य का परिष्कार करती है। मनुष्य के अतंस्तल में प्रकाश और अंधकार का संघर्ष सदैव चलता रहता है, प्रार्थना प्रकाश की शक्ति बढ़ाती है गांधी जी का मानना था कि प्रार्थना केवल शब्दों का उच्चारण नहीं है आधार पर नौकरियां दी जाने के वह विरूद्ध थे और उनका कहना था कि सरकारी नौकरियां योग्यता के आधार पर दी जानी चाहिए।

स्वतन्त्रता के बारे में

गांधी जी की स्वतन्त्रता का अर्थ यह था कि देश के सामान्य कानूनों के दायरे में पूर्ण आजादी। प्रतिनिधि सभाओं की आजादी का मतलब यह है कि वह क्रांतिकारी योजनाओं और विचारों सहित हर मसले पर बहस करे। राज्य के इन सभाओं को कुचलने का प्रयास तभी करना चाहिए जब वे जनता का सही प्रतिनिधित्व नहीं करें और उनमें वास्तव में क्रान्तिकारी विस्फोट हो जाए।

स्वतन्त्रता अभिव्यक्ति स्वतन्त्र संगठन प्रेम का होना ही वास्तविक स्वराज्य है। हांलाकि नागरिक स्वतन्त्रता का अर्थ अपराध की स्वतन्त्रता नहीं है स्वतन्त्रता के नाम पर आप हिंसा को बढ़ावा नहीं दे सकते। अगर हिंसा भड़काई जाती है या हिंसा में लिप्त हुआ जाता है तो राज्य को स्वतन्त्रता का हनन करना चाहिए। स्वतन्त्रता दूसरों के हितों की कीमत पर किस के निजी

स्वार्थों की पूर्ति का लायसेंस नहीं है। प्रेम की स्वतन्त्रता के मामलों में उनकी साफ राय थी कि प्रेम को विभिन्न संदभों में स्वत्रंता टिप्पणियां करनी चाहिए। बल्कि ऐसी स्थिति में ही उसका आदर किया जाना चाहिए फिर भले ही वह थोड़ा बहुत गलत प्रस्तुतीकरण ही क्यों न कर दे।

सभ्यता के बारे में गांधी जी

भारतीय सभ्यता में गांधी जी गहरा विश्वास था और वह कहां करते थे कि कालखेड़ा में संकटों का सामना करते हुए भारतीय पश्चिम की नकल नहीं करनी चाहिए हर संकट के बीच इस सभ्यता का निष्प्रभ बने रहना ही इसकी और न ही ऊँची आवाज में गाना ही प्रार्थना है प्रार्थना दिन से निकालनी चाहिए।

प्रार्थना झुकना सिखाती है आत्मनिरीक्षण में मदद करती है और मन का मैल धो डालती है यह महत्वपूर्ण नहीं है कि आप कितनी देर प्रार्थनी करते है किसी के लिए एक मिनट भी काफी है तो किसी के लिए एक घंटा भी अपर्याप्त है। वह कहते थे कि सुबह प्रार्थना करके अपने पूरे दिन को आत्मीयता और आनन्द से भर लो प्रार्थना से अपने देवत्व को जगाइए।

हिन्दू–मुस्लिम सौहार्द के बारे में

हिन्दु–मुस्लिम एकता के बारे में गांधी जी के विचार धर्म के बारे में उनके फलसफे से निकले थे उनका सर्वधर्म समाभाव में गहरा विश्वास था। इसी उदारता के कारण वह एक कटटरपंथी की गोली का निशाना बन गये उन्होंने धर्म के आधार पर भारत के विभाजन का जबर्दस्त विरोध किया नो। आटवली के दंगों में वह दोनों समुदायों के लिए शांति संदेश लेकर घूमें उनका मानना था कि हिन्दू और मुसलमान एक ही जमीन के बेटे है।''

उनके लक्ष्य समान है उनके ध्येय एक है और उनके दुख भी एक ही। इसलिए उन्हें मिल–जुलकर काम करने की जरूरत है उनका मानना था कि हिन्दू दृ मुस्लिम संबंधों की खूबसूरती उनका अपने धर्मों के प्रति निष्ठावान रहते हुए भी आपसी प्रेम बनाये रखना है। वह शुद्धि और तब्लींग आंदोलनो के सख्त खिलाफ थे और उनका विचार था कि प्रेम में या सार्वजनिक रूप से भड़काऊ विचारों की अभिव्यक्ति पर रोक लगानी चाहिए। धर्म या विश्वास के खासियत है वह बहुत ही गहरे आध्यात्मिक व्यक्ति थे इसलिए इस बात से भुख महसूस करते थे कि आज के दौर में सभ्यता के विकास का मूल लक्ष्य शरीरिक आराम कराना रह गया है। यह सभ्यता औद्योगिकरण को ही सभ्यात के रूप में पेश करती है कोर, हवाई जहाज, कारखानों में बने कपड़े और सौहार्द साधनों को ही इस सभ्यता ने मानव विकास का मापदंड बना दिया है। ऐसी सभ्यता हमारी वास्वविक शारीरिक क्षमता का नुकसान करता है और हमें मजबूर कर

देती है। कि हम दवाओं के सहारे शक्ति हासिल करे इन परिस्थितियों में किसी का भी मन मस्तिष्क प्रसत्र नहीं रह सकता। गांधी जी के मुताबिक सभ्यता कर्तव्यों का दिशा निर्देश करती है। उस लिहाज से हमारी सभ्यता किसी से भी दूसरे दर्जे पर नहीं हैं।

मनुष्य का मस्तिष्क तृष्णा से भरा है जो कभी सतुष्ट नहीं होती इसलिए हमारे पुों ने हमारे लिए इस दौड़ में शामिल होने की एक सीमा तय कर ली थी। इसीलिए हमारी सभ्यता के स्वर्णिम समय में आम

जनता काफी खुशहाल थी उस समय भी वकील और अदालते थी डाक्टर और दवाएं थी लेकिन लोगों को उनके पास जाने का मौका बहुत कम आता था। न्याय इतनरा इच्छा था कि हर कोई मानता था।

साधनों की पवित्रता के बारे में

गांधी जी साधनों की पवित्रता को लेकर काफी दृढ़ थे। भारत की आजादी की लड़ाई में भी देखा जाए तो सुभाष चन्द्र बोस और उनके बीच साधनों की पवित्रता के ही मतभेद थे। चौरी चौरा हत्याकांड के विरोध में उन्होंने अपना बल पकडता आंदोलन, वापस ले लिया था। वह राजनीति में भी मैकिया विलियन सिद्धातों के प्रयोग के आलोचक थे। उनके लिए साधन और साध्य समान चीजे थी।

उनका कहना था कि "साधन केवल साधन नहीं, बल्कि सब कुछ है।"6 इसी सिद्धांत के कारण उनके तत्कालीन नेता उनके कड़े आलोचक रहे। वह कहते थे कि साधन एक बीज की तरह है और साध्य पेड़ की तरह। दोनों मे विभिन्न संबंध हैं।

सत्य साधन भी है। और साध्य भी। समाज का प्रत्येक व्यक्ति बराबर है। इसमें न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। राजा ओर रंक को बराबर करने का तरीका यह नही है कि राजा का सिर काट लिया जाए। "अपवित्र साधनों से पवित्र लक्ष्य हासिल नहीं किये जा सकते।' नैतिकता प्रत्येक धर्म का अंग रही है नैतिक नियमों के माध्यम से ही हम प्रसत्र हो सकते है। इस प्रकार हम. कह सकते है कि वर्तमान समय में गांधी जी के विचार आज भी बहुत उपयोगी है। भारत ही नहीं बल्कि सारा संसार उनके बताये हुये विचारों पर चल रहा है।

गांधी जी के विचार आज भी पूरे संसार में सर्वश्रेष्ट मानते जाते है। अकेले गांधी जी ने ही भारत को अग्रेजो से आजाद कराया तथा गांधी जी की लगन तथा सत्य एवं अहिसा के आधार पर ही भारतवासी आज चैन की सांस ले रहे है। गांधी जी पूरी दुनिया में सबसे महान महापुरूष थे।

महात्मा गांधी जी के विचार थे कि शोषण के विरूद्ध सब लोगों को एक जुट हो जाना चाहिए। लेकिन महात्मा गांधी जी भारत के लोगों को राजनीतिक रूप से जागरूक करने से पहले सामाजिक रूप से जागरूक करना आवश्यक मानते थे। उनका मानना था कि छुआछूत तथा जातिवाद की भवनाओं से विकास रूकता है। जातिवाद को गांधी जी बहुत बुरा मानते थे उनका मानना था कि जब तब छुआछूत का विनाश पूरी तरह नहीं हो जाता तब तक दलितों का उद्धार होना असम्भव है। गांधी जी ने कहा था कि मैं मानता हूँ कि इस संसार के जितनी भी कार्य होते है सब अपूर्ण है जो भी इस संसार मे रहेगा उसे इस अपूर्णता को सहन करना पडेगा।

महात्मा गांधी जी जब दक्षिण अफ्रीका गये थे भारत के निवासी पर अत्याचार होता देख तभी से उनके दिल में अपने देशवासियों के प्रति यह भावना जागी कि हम एक होकर अंग्रेजों के त्याचारों का सामना करेगें। गांधी जी ने अपने अकेले दम पर गोरो को भारत से भगाया तथा गांधी जी हिन्दू–मुस्लिम एकता पर दृढ़ विश्वास करते थे। गांधी जी जातिवाद छुआछूत को बहुत ही बुरा मानते थे वह कहते थे इन सब विचारों से देश का विकास रूकता है। महात्मा गांधी जी इस जाति वाद को

समाप्त करने के लिए अनेक प्रयास किये गांधी जी दलितों के उत्थान के बारे में सोचने लगे और फिर बाद में इन्होंने दलितों के उद्धार के लिए जो कार्य किये उन्हें कभी भी

भुलाया नहीं जा सकता। गांधी जी अत्यन्त निष्ठा लगन और ईमानदारी से उन्होंने अछूतोद्धार की लड़ाई लड़ी। गांधी जी एक महान एवं उच्चकोटि के महापुरूष थे। उन्होंने बुहत से विचार दिये जो आज भी सारे संसार में किसी और ने नही दिये इसलिये वह "राष्ट्रयिता' कहलाये। सारे संसार में सर्वश्रेष्ठ महापुरूष गांधी जी थे उनके जैसा मनुष्य आज तक संसार में कोई ओर नहीं हुआ। भारत को स्वतंत्रता दिलाने वाले गांधी जी में यह कहा जा सकता है कि वे समतावादी, समाजवादी थे गांधी जी को जातिवाद से उन्हे घृणा थी वे कोई मामूली आदमी नहीं थे।

उनकी विद्धता की प्रंशसा अनेक महापुरूषों व समाज सुधारकों ने की है। इसमें कोई संदेह की बात नहीं कि जब तक भारत देश का नाम है। तब तक स्वंतत्रता के इतिहास में गांधी जी का नाम अमर रहेगा। गांधी जी ने ऐसे कार्य किया जिसे साधारण ओर सरल नंही कहा जा सकता।

महात्मा गांधी जी को हर भारतवादी सदैव याद रखेगा जब तक भरतीय संतिवधान रहेगा तब तक प्रत्येक भारवादी को उनकी याद आयेगी। अन्ततः कहा जा सकता है। कि गांधी जी एक महान और उच्चकोटि के विद्वान थे। गांधी जी सारे सारे सर्वश्रेष्ठ महापुरूष थे उनके जैसा पुरूष पूरे संसार में कोई और नहीं हुआ। जब–जब स्वंतत्रता दिवस भारत मनायेगा तव–तव महात्मा

गांधी का नाम सारा भारत याद करेगा। इस प्रकार हम कह सकते है। कि आज भारत जो भी है वह सब गांधी जी की देन है। गांधी जी जैसे महापुरूष भारत में अगर पैदा न होते तो आज भी भारतवासी गोरे के अत्याचार की पीड़ा सहते। गांधी जैसे महापुरूष ने हमें इस पीड़ा से बचाया और गांधी जी ने हमें अंग्रेजी से आजाद कराया और अग्रेजी को भारत से भगाया। इसलिए गांधी जी पूरे राष्ट्र के पिता कहलाये इसलिये गांधी जी राष्ट्रपिता कहलाये।

सन्दर्भ ग्रंथ–सूची

1. एम0पी0त्यागी, आर, के : आधुनिक भारतीय राजनीति एवं सामाजिक रस्तोगी विचार, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, 1980
2. बी०एन० पाण्डेय गांधी महात्मा समग्र चितंन, सब्रो एन्टर प्राइजेज, चावड़ी, बजार, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1994
3. शंकर दयाल सिंह गांधी और अहिंसक विचार, दरियागंज नई दिल्ली, 1996
4. प्रदन एच प्रसाद गांधी, मार्क्स और इण्डिया जी–19, विजय चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली, 1994
5. केशव पाण्डेय स्वातत्रयोत्तर भारत में ग्राम्य विकास ओर गांधी दर्शन, मोहन गार्डन, नई दिल्ली, 1991

6. बिसेंटशीन गांधी जी निदेशक प्रकाशन विभाग सूचना ओर प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पटियाला हाउस, नई दिल्ली, 1994

7. बेली, एफ, जी, पोलिटिकल एण्ड सोराल चेन्ज, यूनीवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस, 1963

8. डे0एस0 के पंचायती राज, राजकमल, प्रकाशन, दिल्ली, 1962

9. दुबे, एस०सी० इण्डिन विलेज, एलाइड पब्लिशर्स, बम्बई, 1967 85

10. भावे, विनोबा : ग्रामदान, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1957

11. भावे विनोबा सुलभ–ग्राम दान, सर्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, पांचवा सस्करण, 1965

12. नारायण, जय प्रकाश : मेरे विचार–यात्रा सर्व सेवा प्रकाशन राजघाट, वाराणसी, 1962

13. गांधी, एम0के0 : बिलेज स्वराज्य नव जीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1962

14. आल्डरकर, हेराल्ड एफ0 : लोकल गवर्नमेन्ट इन डेवलपिग कट्रीज मैक ग्राहिल, 1964

15. कुमारप्पा, जे0सी0 : द विलेज मूवमेन्ट, अखिल भारतीय सेवा संघ, काशी, 1960

16. कृपलानी, जे0बी0 : गाधी दर्शन, अनु, रमा बल्लभ चतुर्वेदी, पराग प्रकाशन, पटना 1958

17. काटोन्सकी, टी : एक और सर्वोदय गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली, 1984

18. गांधी, एम0 के0 : माई एक्सपीरियम विद टुथ नव जीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1948

19. दत्त,रजनीपा :: भारत : वर्तमान एवं भावील पीपुल्स पब्लिसिंग हाउस, नई दिल्ली

20. फिशर लुई : द लाश्फ आफ महात्मा गांधी जोनाथन केप, लंदन, 1962

21. सिंह, अनूप : नेहरू दि राइजिग स्टार ऑफ इण्डिया न्यूयार्क जान डे कम्पनी,1939

22. दत्त आर पाम : इडिया टुडे लदन विक्अर गोलाक्स, 1940

23. दया प्रकाश रस्तोगी : राजनीतिक विवारो का इतिहास साधना प्रकाशन मेरठ, पांचवा संस्करण, 1984

24. डॉ0 गंगादत्त तिवारी : आधुनिक राजनीतिक चितन मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ, पंचम संस्करण, 1981

25. डॉ0 ए0 अवस्थी : भारतीय राजनीतिक चितन रिसर्च पब्लिकेशन जयपुर, प्रथम संस्करण, 1961

26. गंगादत्त तिवारी : आधुनिक राजनीतिक चितन का इतिहास, मीनाक्षी प्रकाशन मेरठ ... संशोधित संस्करण,19681

27. सत्यनाराण दुबे : आधुनिक राजनीतिक चितनं प्रकाशन शिवलाल प्रकाशन आगरा, प्रथम संस्करण, 1961

28. डॉ0 प्रभुदत्त शर्मा : राजनीतिक विचारों का इतिहास, प्रकाशन कॉलेज बुक डिपों, प्रथम संस्करण, 1978

29. डॉ० सुधबाला राष्ट्रीय विचारों का इतिहासं, साधना प्रकाशन, मेरठ पंचम संस्करण, 1984 87

30. एलेक्जेन्डर ग्रे : सामजिक परम्पराए, 1946

31. डॉ० सम्पूर्णनन्द : सामाजिक प्रशासन, प्रकाशन नेशनल प्रा0 दिल्ली, 1961

32. जीवन मेहता :: राजनीतिक चिंतन का इतिहास, प्रकाशन साहित्य भवन, आगरा प्रथम संस्करण, 1982 88